अग्नि कि उपासना

नीरव, निशब्द, प्रशान्त, रामप्रहर. पूरब दिशा में, हल्की सी लालिमा, सुर्यदेव के आगमन की सूचना दे रही थी. झरनोंकी झरझर, नदी की कलकल, खगगणों की चहक, पत्तों की मर्मर से वातावरण प्रसन्न तथा सुगंधित था. दशरथ पुत्र रामचंद्रजी की मनुनिर्मित अयोध्या नगरी से थोडा दूर ऽऽ शरयूतट पर महर्षि विश्वमित्राजीका आश्रमः उनके गुरूकुल के सभी छात्र प्रातः:संध्यावंदना के लिये इकट्ठा हुए थे. पूरी भावुकता से हाथ में जल भरे कलश लेकर सूर्य नारायण को अर्ध्य देनेमें व्यस्त थे. मुख से चल रहा था गायत्री–जाप

ऊँ तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य् धीमहि। धियो योनःप्रचोदयात्।।

इस गायत्री मंत्र के उच्चारण से सभी पाप नष्ट होते हैं:।

इतने में महर्षि विश्वामित्रजीका आगमनः सभी छात्र नम्रता से बोल उठे–'गुरूदेव, नमो नमः। गुरूदेव के 'तेजस्वी भव 'के आशीर्वचन'' से शिष्य प्रभुदित हुये. विश्वामित्रजी अपनी गंभीर वाणी में कहने लगे– ''साधकों, आज मैं तुम्हे अग्निका महत्व उसके विविध नाम तथा कार्य समझाना चाहता हूँ:। ध्यान से सुनो, और उन्हें मुखोद्गत करनेकी चेष्टा करो। पंचमहा. भूतों के कारण ही हमारे धरती का अस्तित्व है।

आकाशाद् वायुः वायुरग्नि. अग्ने आपः (जल) अद्भ्यपृथिवी।।

आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से पानी और पानी से पृथ्वी निर्मित है.सर्वश्रेष्ठ गायत्री, सवितृदेवतासे संबधित इसलिए (सावित्री) मंत्र का अर्थ है––

हमारी बुध्दिको, प्रेरणा देनेवाले सर्वोत्तम तेज (आभा) की हम उपासना करते हैं अग्नि स्वंयप्रकाशी नहीं बल्कि वह परप्रकाशित है गीता में भगवान कहते हैं।

'न तभ्दासयते सूर्यो न शशांको न पावका।

यद्गत्वा न निवर्तन्ते तध्दाम परमं मम।। 15/6

अर्थ– जिस परमपदको पाकर मनुष्य लौटकर संसार में नहीं आते, उस परमपद को न सूर्य, न

चन्द्रमा न अग्नि प्रकाशित करता है, वही है मेरा परमपद इस जगत् के सभी पदार्थों में उस ब्रमाण्डनायक का अक्षय तत्व भरा है. ऋग्वेद का प्रथम सूक्त है।

अग्निमीळे पुरोहितम्– ऋषिकहते हैं।''हमारे सामने उपस्थित अग्निका हम स्तवन करते हैं ''ऐसेही अग्नि का स्तवन करनेवाले 200 के उपर स्तोत्र ऋृग्वेद में हैं और शेष अन्य वेदो में. उपनिषदों में है.। अग्नि, स्वंय यज्ञकर्ता तथा हवनद्रव्य परमात्मा को पहुँचानेवाला एकमात्र दूत है। '' बीचमे एक शिष्य ने पूछा, ''गुरूदेव गायत्री मंत्र के स्फुरक तथा उद्घोषक आप स्वयं ही हो क्या यह सत्य है? विश्वामित्र बोले, ''वत्स ये मेरा कर्तृत्व नहीं, सर्वशक्ति मान भगवान की अंतरिम प्रेरणासे, मेरे हृदयसे निकले हुए उत्स्फूर्त शब्द मंत्र में परिवर्तित हुए. उस काल के ऋषियों में उनकी अथक तपस्या का फल था। उनकी पवित्र तथा समृध्द वाणी उनके शापित शब्दों से गौतमपत्नी अहिल्या शिला बन गई और रामायण काल में वह राघवजीके पावन पदस्पर्श से सजीव भी हुई.

अग्नि देवताओंका प्रधान सेनानी जो आध्यात्मिक विकास का कारण है. अहं वैश्वानरो भूत्वा प्रणिनां देहमाश्रितः।।15/14 गीता. हमारे शरीरस्थ अग्नि वैश्वानर है जो हमारे सभी शारीरिक मानसिक तथा अध्यात्मिक कर्मोंके प्रेरक है. अग्नि की उपासना से समाज, धनधान्य की समृध्दि बरकरार रखता है, प्रातःकाल में गहिपत्याग्नि, मध्यान्ह का दक्षिणाग्नि तथा सायंकाल में आहवनीयाग्नि का स्तवन होता है'',

शिष्यों के प्रसन्न चेहरोंको देखकर विश्वामित्रजी आगे चलकर बोले, ''चलो, अभी मैं तुम्हे अग्निकी विभिक्त संज्ञाएँ तथा उनके कार्य का परिचय करा दूँ,

अ. नं.	नाम	कार्य	अ.नं.	नाम	कार्य
1	पावक	पाकक्रिया, यज्ञ	19	इड	पूर्णाहुति
2	मारूत	पुंसवन (अठांगुळ)	20	क्रोध	दुष्टकर्मनिवारणार्थ–यज्ञ
3	पवमान	सभी शुभ कार्य	21	कामद	वशीकरण
4	शोभन	सभी शुभ कर्म	22	दूजक	वनदहन के लिये (खाण्डावन)

5	मंगल	सीमंतोकायन वांग. निश्चय	23	जठर (जठराग्नि)	अन्नपाचन के लिये
6	प्रबल	जातकर्म संस्कार	24	कव्यात	प्रेत कर्म प्रित्यर्थ्य
7	पार्थिव	अन्नप्राशन संस्कार	25	वन्हि	लक्ष संख्यालक होमाग्नि
8	सभ्य	चौलकर्म (उपनयन)	26	हुताशन	कोटि सख्यालक होमाग्नि
9	सूर्य	गोप्रदान विधि	27	अश्वर	वृषोत्सर्ग (बैलोका दान)
10	योजक	विवाह विधि	28	सुचय	ब्रह्म यज्ञ
11	शिखी	चतुर्थीकरण विधि	29	वडवाह	समुद्र–अग्नि
12	धृति	व्रत के आरंभ का यज्ञ	30	संवर्तक	क्षय
13	रूक्मक	वैश्व देव का अग्नि	31	गहिपत्य	घरेलु ब्रह्म कर्म हेतु
14	विट	प्रायश्चित विधि के लिये	32	दक्षिण	शंकरजी आराधना हेत
15	कव्यवा हन	श्राध्द पक्ष के अवसर पर	33	आहवनीय हुताशन	सायंसध्याका विष्णु पुजन
16	हव्यवाह न	देवताकार्य के यज्ञप्रित्यर्थ	34	त्रयोग्नि	24 घंटो के अग्निहोत्र का अग्नि
17	वरद	शांतिकर्म के यज्ञसमय	35	अनल जातवेद, वैश्वानर	हुताशन
18	बलवर्धन	पृष्ठिकर्मार्थ	36	सुसमिध, तनूनपात	इळ, बर्हि

जलज पार्थिव धृतभक्षक वनस्पतिज अग्नि, आदि, उसी के रूप है सुसर्मिप से लेकर वनस्पतिज अग्नि की क्रमशः निर्मित स्थल ये हैं– समिधाओंसे प्रज्वलित अरणि में गर्भरूपसे विद्यमान, स्तुतिके अवसरपर यज्ञ में प्रदिप्त अग्नि बर्हि, दर्भ से दीप्तिमान जलन, बिजली की कडकडाहट, पाकसिध्दि में उपस्थित पार्थिव, यज्ञ में घृतभक्षक दावानल–वनस्पतियोंकी घर्षण का फल.

अग्नि अपनी स्वत जिव्हाओं से सभी पदार्थो की तबाही कर सकता है वह सर्वरक्षक भी है और सर्वभक्षक भी जैसा उपयोग वैसा फल आंतर्देशीय युध्दो में अणवस्त्रों से कई निष्पाप जीवोंकी

हत्या भी होती है और जीवित व्यक्तियों का ऑपरेशन द्वारा (अग्नि काकार्य) उपचार भी होता है पाकसिध्दी तथा सामाजिक संपत्ति का दहन करना दोंनों उसीके कार्य हैं. आज के पाठ में मैंने अग्नि की उपासना का आत्मशुध्दि, शरीरशुध्दि, समाज तथा वातावरण की शुध्दि आदि परिणाम बतायें उनपर स्वयं मनन–चिन्तन करें और अग्निको देवतारूप मानकर उसकी आराधना करें।

विश्वामित्रजी की अग्निचर्चा यहीं समाप्त होती है सभी शिष्य ठगे से रहे, किन्तु विचारोंमें खोकर बैठनेका उन्हें कहाँ अवसर? कई साधक जंगल में ईधन लाने चल पडे, कोई वृक्षवल्लरियों के सिंचन में जूट गये, कोई पूजार्थ सुमन बटोरेने गये. कोई रसोईगृहमें गुरूपत्नी का हाथ बँटाने चले, तो कोई नदीकिनारे जलभरण के लिये निकले.

लेकिन सभी शिष्यों के आंतर में अपने गुरूदेव के प्रति कृतज्ञता का भाव उभर आया मन ही मन उनका गहरा विद्याध्ययन, उनकी ओजस्वी तथा प्रवाही वाणी से सभी तृप्त हुये ऐसे विद्वान गुरूके शिष्य होने का उन्हें गर्व हुआ और सभीने मनमें ठानी कि

।।ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

अग्निदेवता पान 406
सन्दर्भ ग्रंथ वैदिक आन्हिक
डॉ. शांताराम परशुराम आपटे.(मराठी)
(अग्निके विविध नाम तथा उनके कार्य)
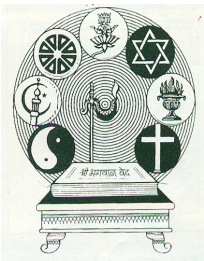
प्रेषक– मालती दामले
चन्द्रवदन 1,डी–216
गणेशवाडी, ठाणे पश्चिम,
पिन 400601.
दूरध्वनि–25345278